सात समन्दर पार से

किमिया

हदिस लज़र ग़ोलामी

कला
मेहरनूश मासूमियाँ

एकलव्य

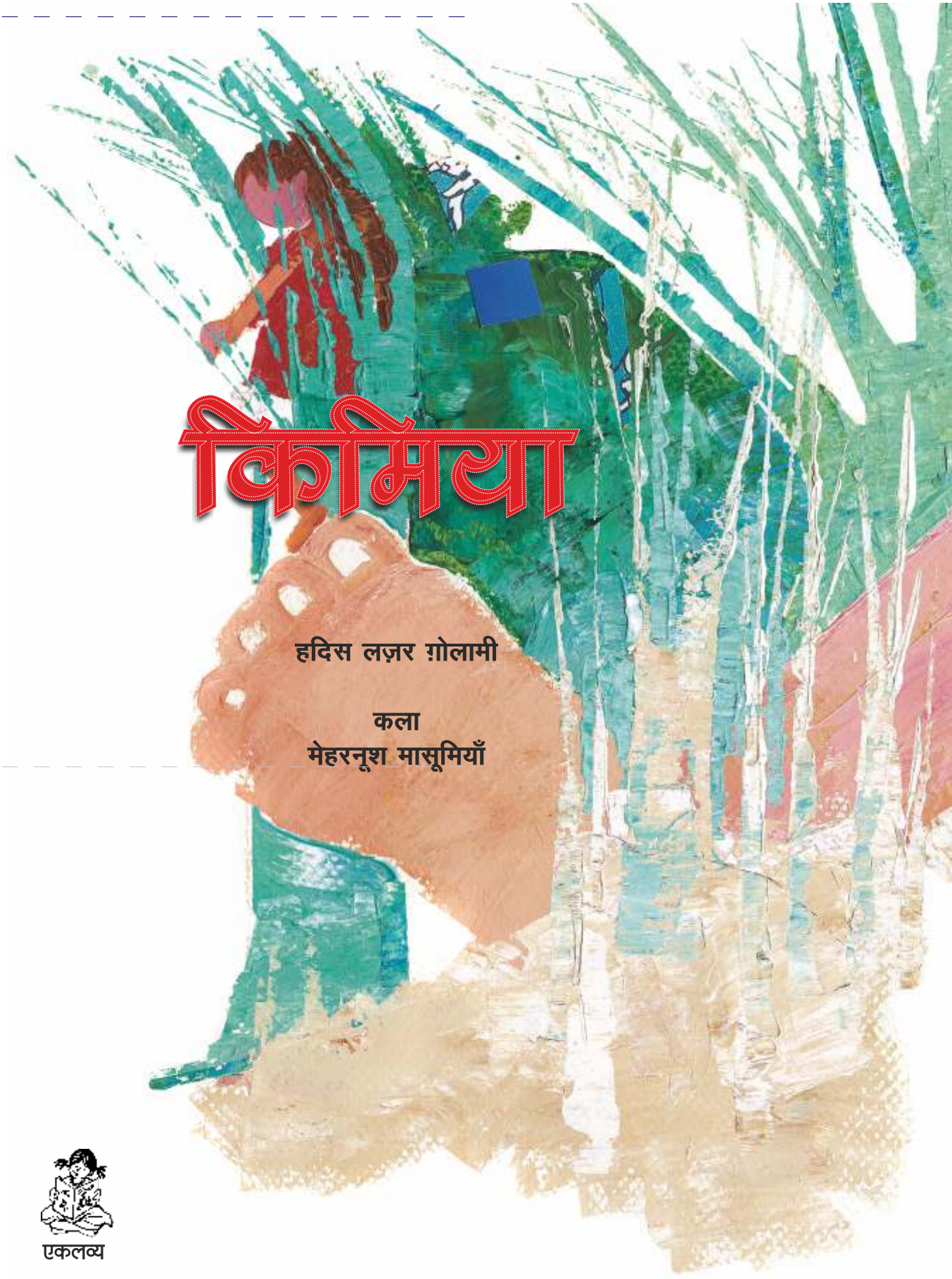

किमिया

हदिस लज़र ग़ोलामी

कला
मेहरनूश मासूमियाँ

एकलव्य

किमिया

KIMIYA

हदिस लज़र ग़ोलामी

कला: मेहरनूश मासूमियाँ

अँग्रेज़ी से अनुवाद: दीपाली शुक्ला

Originally in Persian published by Shabaviz
© Shabaviz, Tehran, Iran
© हिन्दी अनुवाद: एकलव्य (2016)

मार्च 2016/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-85236-04-4
मूल्य: ₹ **48.00**
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है **(ISBN: 978-93-81337-80-6)**

प्रकाशक: एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोन: +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल, फोन: +91 755 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ जंगल-मुक्त नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

सब नींद में थे जब किमिया मरी, खुद किमिया भी।

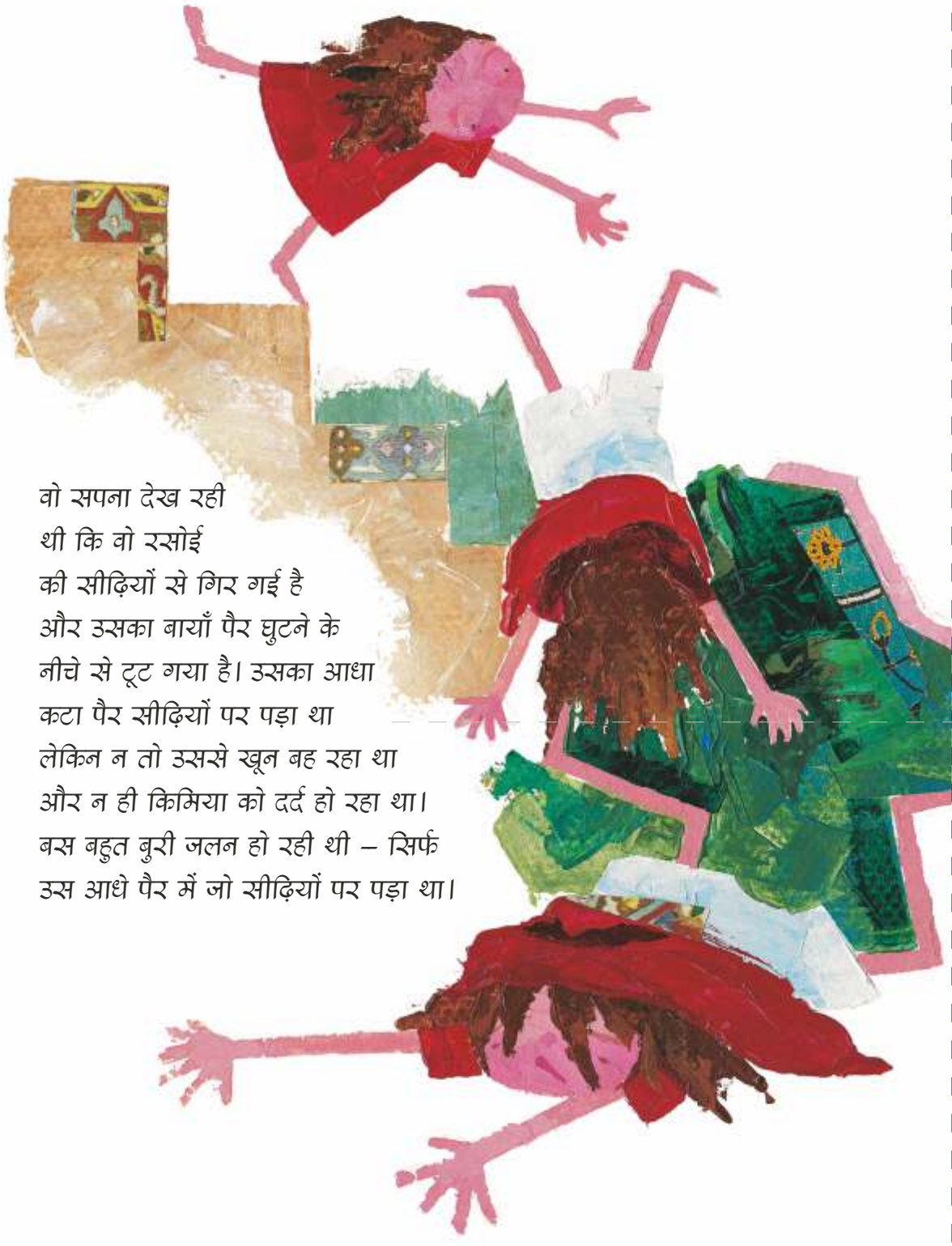

वो सपना देख रही
थी कि वो रसोई
की सीढ़ियों से गिर गई है
और उसका बायाँ पैर घुटने के
नीचे से टूट गया है। उसका आधा
कटा पैर सीढ़ियों पर पड़ा था
लेकिन न तो उससे खून बह रहा था
और न ही किमिया को दर्द हो रहा था।
बस बहुत बुरी जलन हो रही थी – सिर्फ
उस आधे पैर में जो सीढ़ियों पर पड़ा था।

अपनी आधी बाईं टाँग और दूसरी अच्छी टाँग से बगैर किसी तकलीफ के वो सीढ़ियाँ उतरकर नीचे गई और उसने अपने टूटे पैर को उठा लिया। जैसे ही उसने तय किया कि वो उसे घुटने से जोड़ लेगी, वो नींद से जाग उठी – हकबकाई और अचम्भित। वो साँस नहीं ले पा रही थी। वो मर चुकी थी।

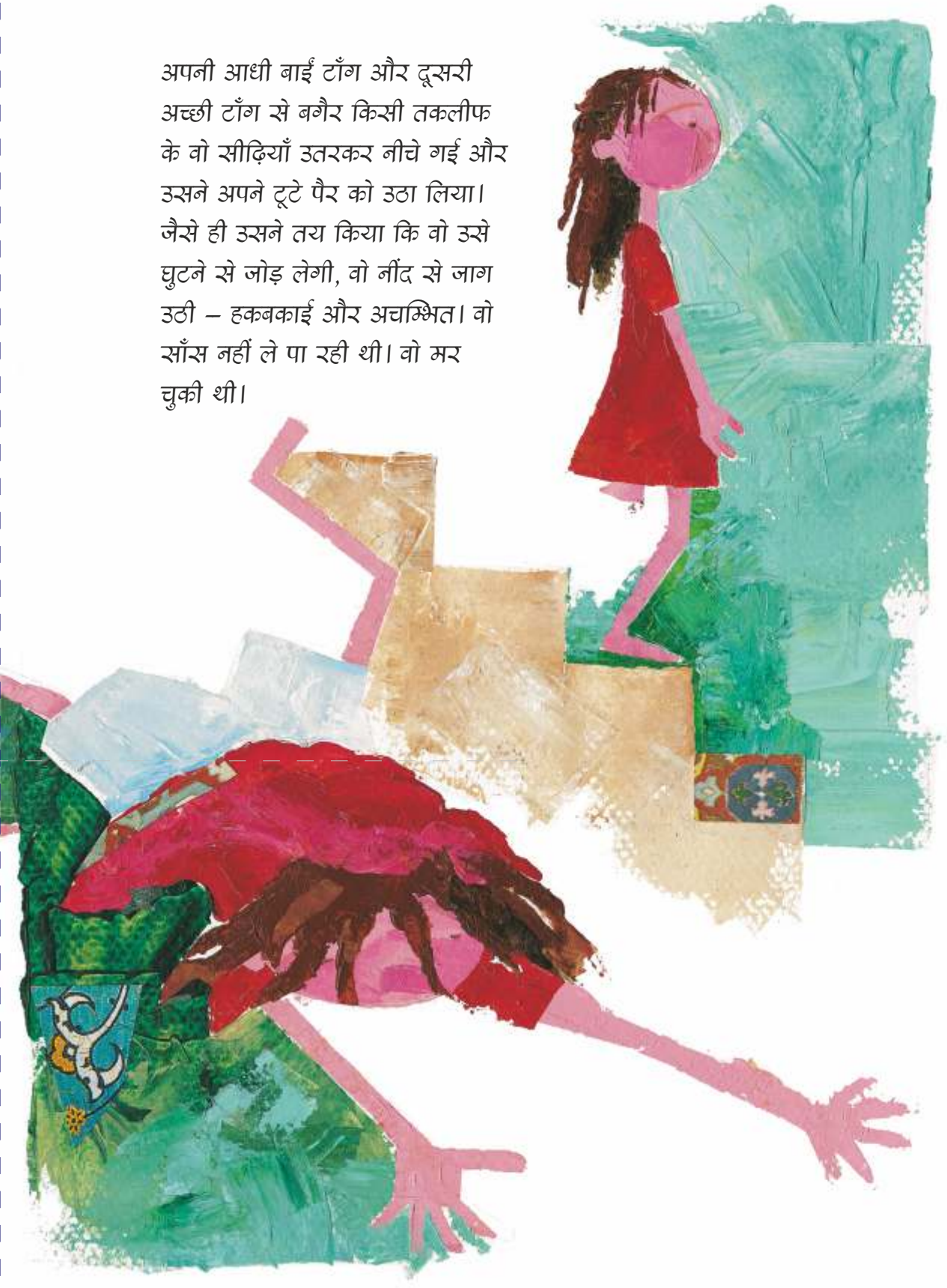

मदाम मौत उसके दरवाज़े के सामने खड़ी थी और अपनी सलवार को सहेज रही थी। उसने अपनी दबी हुई आवाज़ में कहा, "प्यारी किमिया! जल्दी करो और फटाफट तैयार हो जाओ। आज रात मुझे और भी कई जगह जाना है।"

किमिया ने कहा, "क्या मुझे अम्मी को अलविदा नहीं कहना चाहिए।"

मदाम मौत ने कोने से होंठ चबाते हुए कहा, "तुम्हें पता है वक्त क्या हुआ है? प्यारी बच्ची, क्या तुम रात के दो बजे जाकर अपने अब्बा-अम्मी के कमरे का दरवाज़ा खटखटाना चाहोगी? शायद वो तुम्हें अलविदा कहने को तैयार न हों! प्लीज़ ज़रा जल्दी करो!"

बिस्तर के पास की अलमारी में से किमिया ने सफेद रंग का लम्बा स्कर्ट चुना ताकि वो अपनी कटी टाँग को छिपा सके। वी-कॉलर वाली नीले रंग की जर्सी वो पहने ही थी जो उसकी सफेद स्कर्ट के साथ जँचती थी।

मदाम मौत ने कहा, "मेरा खयाल है कि आज की रात मैं जितने लोगों को ले जा रही हूँ उनमें तुम सबसे सुन्दर लड़की हो! अफसोस कि तुम्हारी एक टाँग नहीं है।"

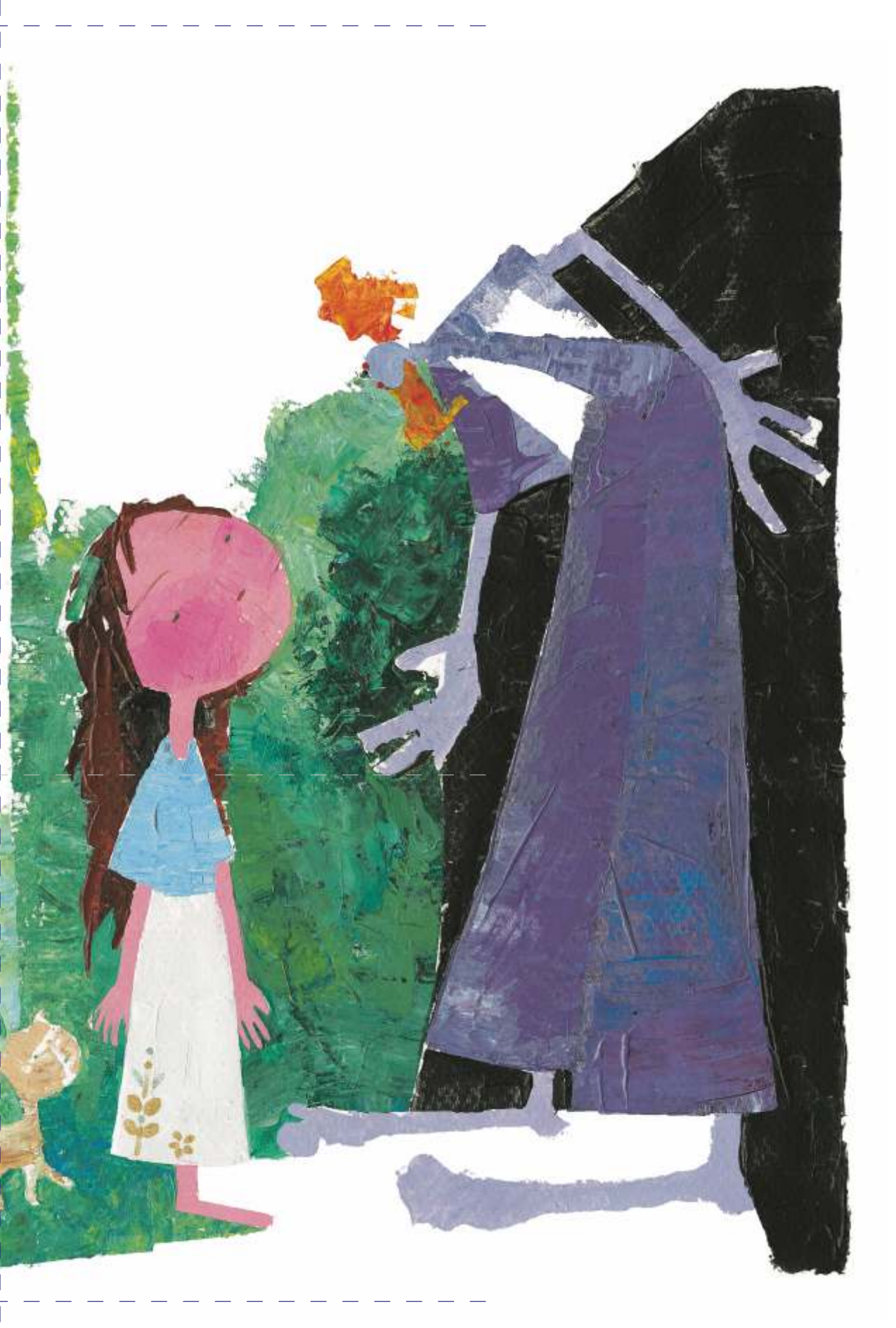

किमिया बिस्तर के किनारे पर बैठ गई और कहने लगी, "सुनो! क्या तुम मेरे पैर को चिपकाकर उसे पहले जैसा साबुत नहीं बना सकती?"

उसने अपना स्कर्ट उठाया। मदाम मौत अपना चेहरा दूसरी ओर करना चाहती थी ताकि उस भद्दे नज़ारे को देख उसे मितली न हो। पर किमिया की टाँग से ज़रा भी खून नहीं बह रहा था सो उसे देखकर वह घबराई नहीं।

"अरे, अरे, प्यारी किमिया,
मरे हुए लोगों के पैरों को हाथ
लगाने की मुझे इजाज़त नहीं
है," मदाम मौत ने कहा।
"हो सकता है कि मेरी
वजह से तुम्हें परेशानी
हो। और बाद में
शायद सब मुझे ही
दोष दें। मेरी
गलती के लिए
खुदा को जवाब
कौन देगा?"

किमिया ने अपनी आँखें मिचमिचाईं, होंठ सिकोड़े और
प्यार से अपने सिर को एक ओर झुकाया।

किसी प्यारी-सी गुड़िया की तरह
वो बोली, "तुम्हीं ने तो कहा था कि
अफसोस की बात है कि मेरी एक
टाँग नहीं है। क्या तुम्हें यह
बर्दाश्त है कि सब चल रहे हों,
दौड़ रहे हों, उछल-कूद कर
रहे हों और मैं एक अपाहिज
बच्ची की तरह मुँह
लटकाए कोने में बैठी
रहूँ? प्यारी मदाम
मौत, खुदा के वास्ते
मेरी टाँग को जोड़ने
की कोशिश करो!"

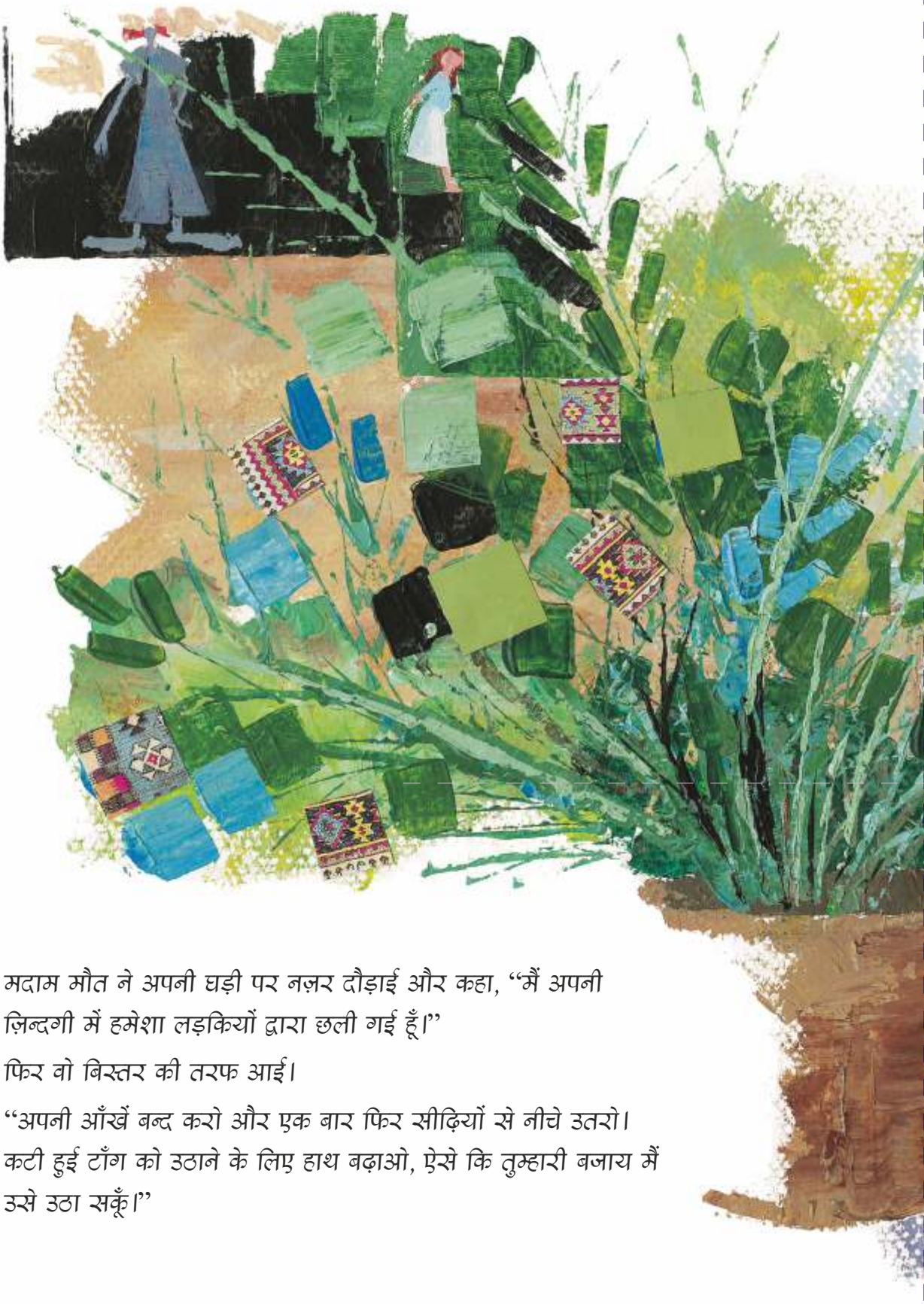

मदाम मौत ने अपनी घड़ी पर नज़र दौड़ाई और कहा, "मैं अपनी ज़िन्दगी में हमेशा लड़कियों द्वारा छली गई हूँ।"

फिर वो बिस्तर की तरफ आई।

"अपनी आँखें बन्द करो और एक बार फिर सीढ़ियों से नीचे उतरो। कटी हुई टाँग को उठाने के लिए हाथ बढ़ाओ, ऐसे कि तुम्हारी बजाय मैं उसे उठा सकूँ।"

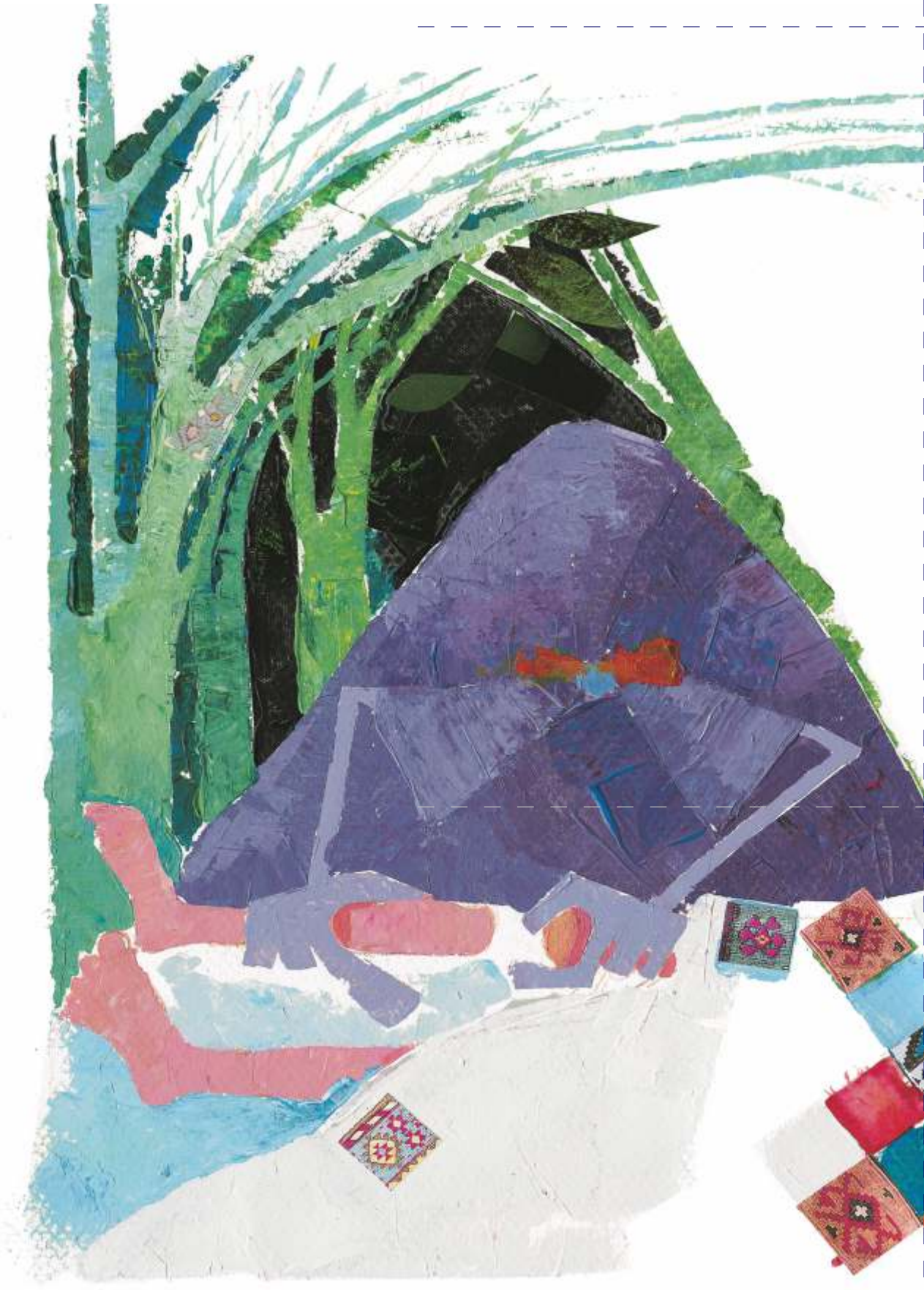

किमिया हौले से बिस्तर पर पसर गई। अपनी आँखें बन्द करके वो फिर एक बार सीढ़ियों से नीचे उतरने लगी। उसकी बाईं टाँग का दूसरा हिस्सा सीढ़ी की सबसे निचली पायदान पर पड़ा था। उसने अपना हाथ नीचे की ओर बढ़ाया। मदाम मौत ने टाँग का कटा हिस्सा उठाया और बिस्तर पर बैठ गई। उसने किमिया के शरीर पर से चादर हटाई, टाँग के दोनों हिस्सों को आपस में लगाया और बुदबुदाई, "खुदा, मेरी मदद कर!"

उसने किमिया की टाँग के दोनों हिस्सों को रगड़ा। किमिया को कोई दर्द महसूस नहीं हुआ। बस हल्की-सी जलन हुई। मदाम मौत ने उसकी टाँग को छूकर कोई जादुई मंत्र बुदबुदाया। किमिया नींद में मुस्करा रही थी। उसकी कटी हुई टाँग जुड़ चुकी थी।

मदाम मौत बिस्तर से उठी और कहने लगी, "शुक्र है खुदा का सब ठीक हो गया। अब उठो और चलना शुरू करो। हमारे पास बरबाद करने के लिए वक्त नहीं है!"

किमिया हिली नहीं। वो गहरी नींद में थी, अपनी आधी मुस्कान के साथ। मदाम मौत ने उसे झकझोरा। ऐसा लगा मानो उसमें जान ही न हो। वो ज़रा भी नहीं हिली। कितनी गहरी नींद थी उसकी!

मदाम मौत को लड़कियों को नींद से उठाने की आदत नहीं थी। वो सिर्फ इसलिए उस सुन्दर छोटी लड़की को नींद से कैसे जगा सकती थी कि उसके मरने का वक्त आ गया था! उसने एक बार और अपने हाथ में पकड़े कागज़ के टुकड़े पर नज़र दौड़ाई। कमाल है! रात को दो बजे जिन मेहमानों के घर मदाम मौत को जाना था, उस सूची में किमिया का नाम ही नहीं था। उसका नाम पहले उस फेहरिस्त में था पर अब गायब हो गया था। पहले जहाँ उसका नाम दर्ज था वहाँ अब केवल खाली जगह बची थी। और नीचे एक नई इबारत नज़र आ रही थी:

"किमिया सो रही है...
कृपया उसे न जगाएँ।
शुक्रिया!"

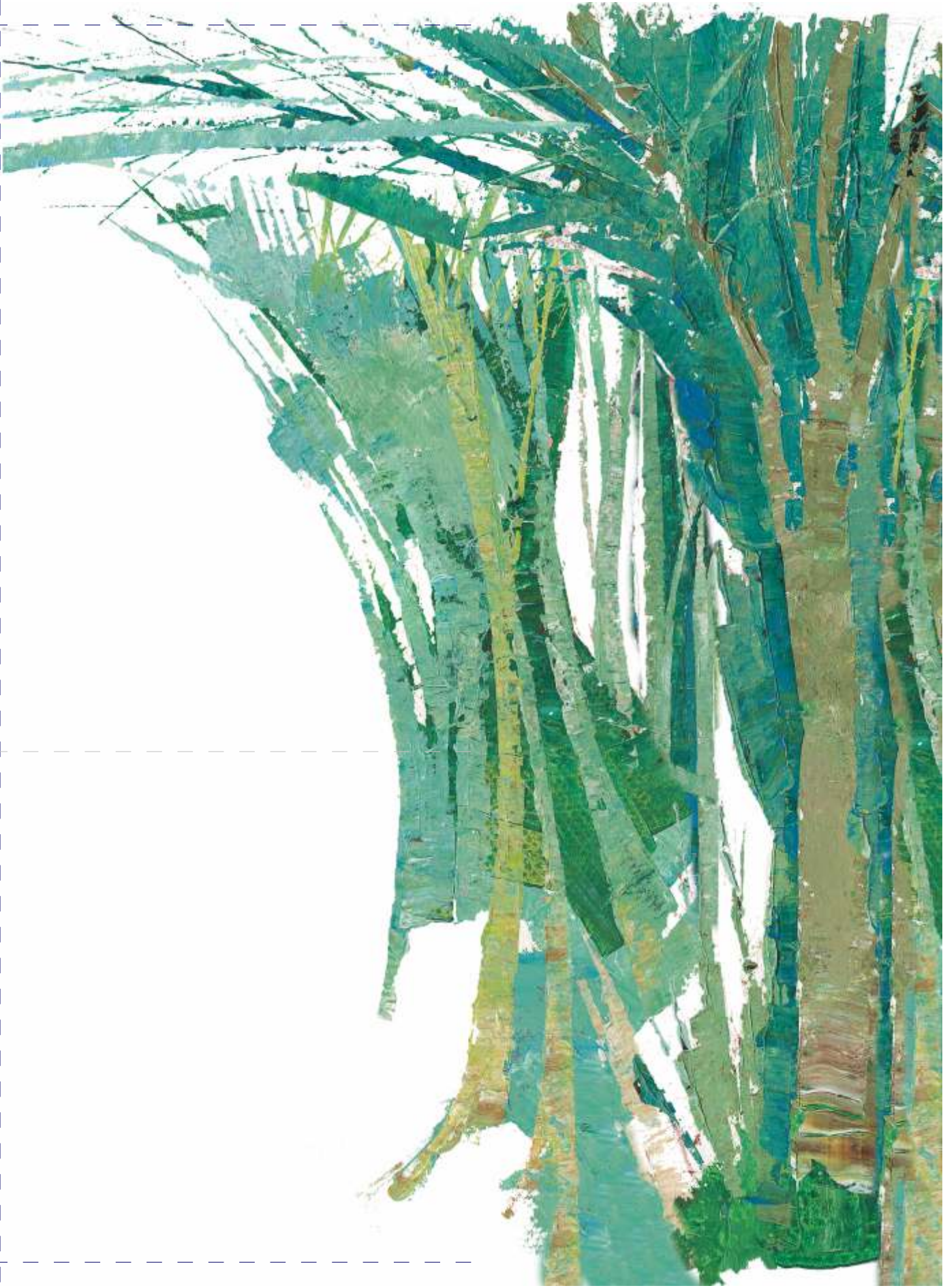

क्या किमिया वाकई मर गई? या वह मौत का सपना देख रही थी? पढ़िए यह कहानी जिसमें हर मोड़ पर कुछ अनोखा है।

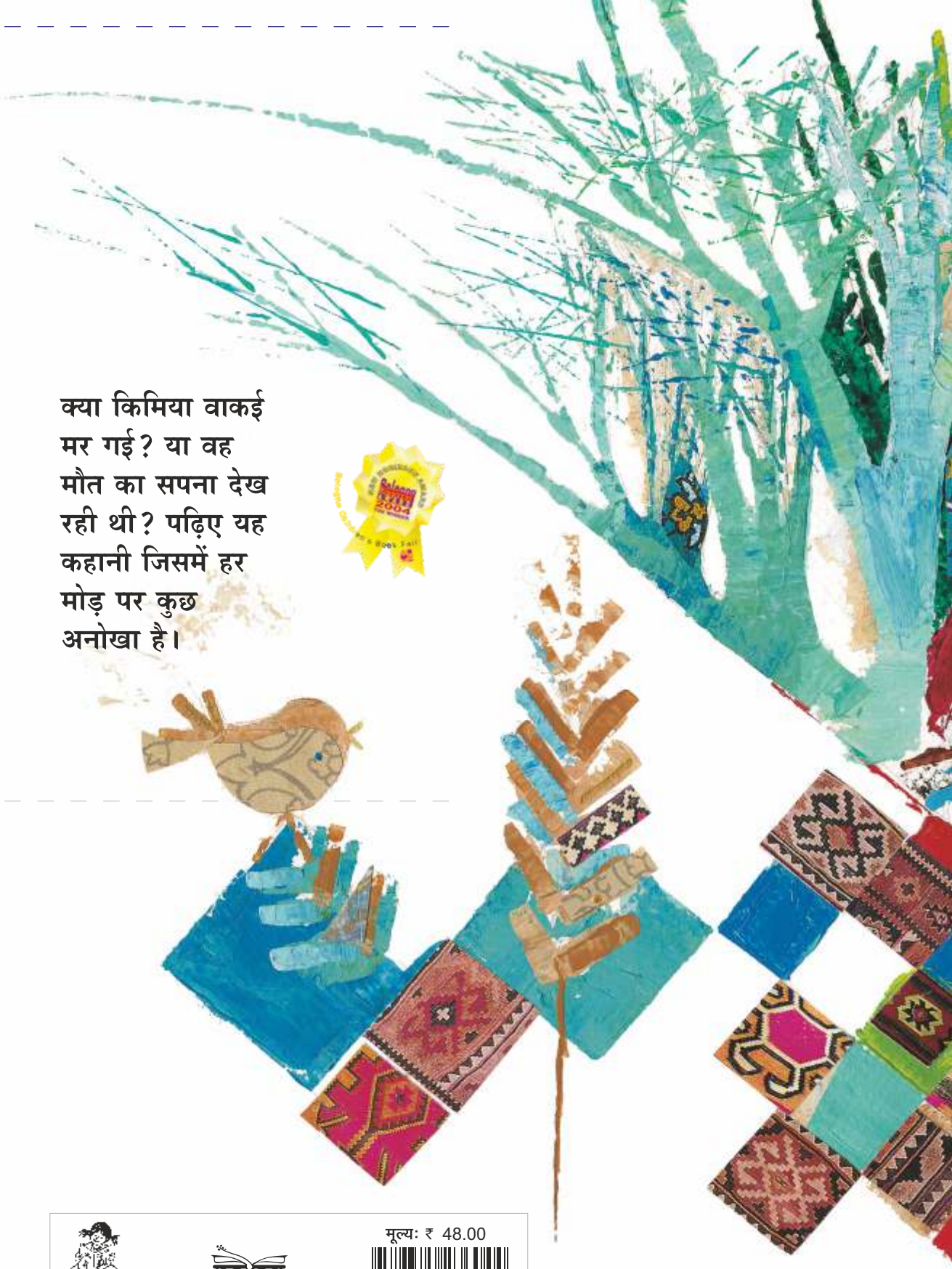

एकलव्य

parag
AN INITIATIVE OF THE TATA TRUSTS

मूल्यः ₹ 48.00

9 789385 236044